कुरिन्थियों की नाई आपकी मंडली के पास आत्मिक वरदान हैं।

जो बच्चों को सिखाते हैं वे अध्ययन सी 6 बी

हर एक परमेश्वर से विशेष वरदानों के साथ
सब विश्वासी एक दूसरे की सेवा करें

1. **अपने आप को प्रार्थना और परमेश्वर के वचन में तैयार करें कि आप अपनी मंडली को अपने आत्मिक वरदानो के साथ सेवा करने के लिये संगठित कर सकें।**

   उन गतिविधियों को चुने जो हाल की आवश्यक और स्थानिय रीति रिवाज में सही बैठती है।

प्रार्थना: "प्रभु यीशु कृपया हमारे मंडलियों के सभी सदस्यों और सैल ये खोजे कि जो शक्ति आपने उनमें डाली है कि वे" आनन्द से "आपकी या दूसरों की सेवा करें"

रोमियों 12:4-8 में खोजें:

- विश्वासियों के आत्मिक वरदानों से किसे काम होना चाहिये *[पद 5]*
- परमेश्वर कैसे निर्णय लेता है कि हर विश्वासी को क्या वरदान दें *[पद 6]*
- दो बोलने वाले कौन से वरदान होना चाहिये *[6 और 7]*
- सेवा करने वाले तीन कौन से वरदान हैं *[7 और 8]*

1 कुरिन्थि अध्याय 12 में खोजें कि किस प्रकार परमेश्वर का पवित्र आत्मा हर विश्वासी को एक दूसरे की सेवा करने के लिये शक्तिशाली योग्यता देता है।

- कौन आत्मिक वरदान योग्यताएं और गतिविधियां देता है? *[पद 3-6]*
- कौन से विश्वासी आत्मिक वरदान पाते हैं? *[7 और 11]*
- पवित्र आत्मा किस अभिप्राय के लिये आत्मिक वरदान देता है? *[7]*
- कौन चुनता है कि कौन सा वरदान विश्वासी प्राप्त करेगा? *[11]*
- किन मसीहियों के पास परमेश्वर का पवित्र आत्मा है? *[12 एवं 13]*
- यदि कोई आत्मिक वरदान है जो सब मसीहियों के पास होना चाहिये? *[27-30]*

1 कुरिन्थि 14:24-26 में खोजिये:

- नमूने के तरीके जिसमें हर विश्वासी सभाओं में दूसरों की सेवा कर सकते हैं।

- हर विश्वासी का आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल करने का क्या अभिप्राय होना चाहिये

इफिस्सियों 4:10-16 खोजें:

- कौन मन्डलियों को वरदान पाये हुए लोग देता हैं। *[10-11]*
- पाँच प्रकार के वरदान पाये लोग मन्डलियों को दिये जाते हैं *[11]*
- वरदान पाये लोगों को अपने वरदानो से क्या करना चाहिये *[12]*
- जब कलीसियाएं अपने आत्मिक वदरानों को अभ्यास में लाती तो उनके परिणाम *[13-16]*

1 पतरस 4:7-11 में खोजें:

- जब विश्वासी एक दूसरों के प्रति अपने आत्मिक वरदान इस्तेमाल करते तो उनका रवैया कैसा होना चाहिये *[7-9]*
- विश्वासियों को अपने आत्मिक वरदानों से क्या करना चाहिये *[10]*
- दो मुख्य प्रकार के आत्मिक वरदान। *[11]*
- वरदान पाये वक्ता को क्या कहना चाहिये *[11]*
- वरदान पाये हुए सेवक अपने वरदानो को इस्तेमाल करने के लिये सामर्थ कहां से पाते हैं *[11]*
- हमें अपने आत्मिक वरदानो से किसकी महिमा करनी चाहिये *[11]*

पता करें कि किस प्रकार पतरस ने अपने देने के वरदान को प्रेरित 4:32-37 में कैसे इस्तेमाल किया प्रोत्सहित में प्रेरित 9:22-27; विश्वास में प्रेरित 11:22-66 शिक्षा में 13:1 और प्रेरित में प्रेरित 13:2-4।

2. अगामी सप्ताह की गतिविधियों की योजना अपने सह-कर्मियों के साथ बनायें।

आत्मिक वरदानों के वर्णन को देखने के लिये साथ-साथ पौलुस तिमुथि पुस्तिका के एस 6 इ को दुहरायें। दोनो पुस्तिकाओं को दुहराने की योजना बनायें और उसे भी जो आप चरवाहों के सभी छोटे झुन्डों का अध्ययन कर रहे हो।

झुन्ड के हर सदस्य के आत्मिक वरदानों पर चर्चा करें। यदि आप उन्हें जानते हैं तब।

हर एक छोटे झुन्ड के चरवाहे को झुन्ड के सदस्यों को सुनने का प्रबन्ध करें और उन पर नजर रखें कि उनके (हर एक के आत्मिक वरदानों को जान सकें।

यदि छोटा झुन्ड कोई वरदान चाहता जो दूसरे झुन्ड के पास है तब प्रबन्ध करें कि वरदान क्या हुया व्यक्ति थोड़े समय के लिये दूसरे झुन्ड के पास जायें।

3. आने वाली आराधना के लिये अपने सह कर्मियों के साथ योजना बनायें।

बतायें या नाटक द्वारा प्रस्तुत करें कि किस प्रकार बरनबास ने अपने आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल किया और चर्चा करें कि क्यों उसका नाम बदल दिया (प्रेरित 4:36)

वर्णन करें कि परमेश्वर आत्मिक वरदानो का निश्चय करता है कि जो विश्वासी को पाना है, हमें उन्हें किस उद्देश्य से इस्तेमाल करना है और दूसरे मार्ग दर्शन (देखें भाग 1) भाग 1 से आत्मिक वरदानों के विषय प्रश्न पूछें।

विश्वासियों को गवाही देने दीजिये कि किस प्रकार से उन्होंने दूसरों से सहायता प्राप्त की जिन्होंने अपने आत्मिक वरदानो को प्रेम से बुद्धिमानी से इस्तेमाल किया।

1 कुरिन्थी 14:24-31 साथ साथ पढ़ें विश्वासियों को विभिन्न आत्मिक वरदानों को बताने दें। उन्हें बताने दें कि उन्होंने इन में से किसी वरदान को अभ्यास में लाते हुए किसी मन्डली में देखाए।

बच्चों को नाटक और प्रश्न जो तैयार किये हैं प्रस्तुत करने दें।

प्रभु भोज को परिचय कराने के लिये 1 कुरिन्थि 11:23-34 पढ़ें बतायें कि किस प्रकार से कुरिन्थियों ने प्रभु भोज को अनरीति लिया और क्यों प्रभु ने कुछ को बीमार होने दिया और मरने दिया।

विश्वासियों को दो या अधिक के झुन्ड बनाने दें कि वे अपने आत्मिक वरदानों के लिये बातें करें। एक दूसरे की सुने, एक दूसरे को प्रोत्साहित करें, और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करें।

रोमियों 12:10-11 साथ साथ कंठस्त करें।

आत्मिक वरदान इस्तेमाल करने का मार्ग दर्शन

1. जैसे लोग छोटे झुन्ड में एक दूसरे की सेवा करते हैं, तो उनके आत्मिक वरदान दिखने लगेंगे और दूसरे उन्हें पहचानने लगेंगे। नये विश्वासियों को सेवा करने से वंचित ना करें।
2. सभी विश्वासियों के लिये उनको आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल करने के लिये शुभ अवसर प्रदान करें। ये छोटे झुन्डों में उत्तमता से किया जाता है। मन्डली की सभाओं को सीमित न करें कि वरदान पाये लोगों को सुन सकें।
3. विश्वासियों को लगातार स्मरर्ण दिलाते रहो कि उन्हें जब वे आत्मिक वरदान इस्तेमाल करते हैं तो उन्हें लोगों के प्रति प्रेम होना चाहिये। जब लोग गुस्सा हैं या रूखे हों तो उनका वरदान नुकसान पहुंचा सकता है।
4. कलीसिया में लोगों को सेवकाई में मैं जिम्मेदारियां उनके वरदानो के अनुसार लेने दें। लोगों को ऐसा काम ना दें जिसमें उनको वरदान नहीं है।
5. प्राचीनो को बोलने का वरदान होना चाहिये और डीकनो (सेवकों) को सेवा करने का वरदान होना चाहिये।
6. छोटे झुन्डों और सेवकाई की टीम में ऐसे सदस्य होना चाहिये जिन्हें विभिन्न प्रकार के वरदान हों जिससे पवित्र आत्मा मित्र भाव का हो सके। एक से वरदान वाले लोगों को झुन्ड में ना रखें।
7. आत्मिक वरदान का होना दूसरे विश्वासियों पद अधिकार नहीं देता बल्कि आत्मिक वरदान को मसीह की सेवा में इस्तेमाल करना चाहिये इस प्रकार से कि जो दूसरों की भलाई खोजता हो।
8. हर विश्वासी दूसरे के लिये महत्वपूर्ण है, उनके जांत पात शिक्षा के स्तर या समाजिक वर्ग के विपरीत वे एक दूसरे के लिये महत्वपूर्ण हैं।

Copyright 2004 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net